डॉ० ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा

विषय – संस्कृत, बी० ए० स्नातक (प्रतिष्ठा)
प्रथम वर्ष, प्रथम पत्र
किरातार्जुनीयम् – प्रथमसर्ग

पद्यांश व्याख्या

विधाय रक्षान् परितः परेतरान्
अशङ्किताकारमुपैति शङ्कितः ।
क्रियापवर्गेष्वनुजीविसात्कृताः
कृतज्ञतामस्य वदन्ति सम्पदः ॥ १५ ॥

अन्वयः – (सः) शङ्कितः (सन्) परितः परेतरान् रक्षान् विधाय, अशङ्किताकारम् उपैति । क्रियापवर्गेषु अनुजीविसात्कृताः सम्पदः अस्य कृतज्ञतां वदन्ति ।

अन्वयार्थ – ((सः) शङ्कितः (सन्) परितः) शङ्का करता हुआ वह सुयोधन चारों ओर शत्रुओं को फोड़ने वाले (परेतरान् रक्षान् विधाय) अपने जनों को, रक्षकों के रूप में नियुक्त करके (अशङ्किताकारम् उपैति) शङ्कारहित आकार धारण करता है। (अर्थात् आकार से शङ्कित नहीं दीखता) (क्रियापवर्गेषु अनुजीविसात्कृताः) सौंपे गये कार्यों के पूरा करने पर सेवकों को सदैव के लिए पुरस्काररूप में) दी गई (सम्पदः) सम्पत्तियाँ (अस्य कृतज्ञतां वदन्ति) उसकी कृतज्ञता प्रकट करती हैं।

भावार्थ – दुर्योधन की रक्षा व्यवस्था और भेदनीति का वर्णन करते हुए कवि ने यह बताया है कि दुर्योधन रक्षकों को

Scanned with CamScanner

नियुक्त करके भी उन पर सतर्कतापूर्ण दृष्टि रखता है और सेवकों को पुरस्कार भी देता है।

परव्याख्या - परितः परेतरान् रक्षान् विधाय - चारों ओर अपने पक्ष के जनों को रक्षक बनाकर। परितः = सर्वत्र, परि + तस्। परेतरान् = अपने लोगों को, शत्रुओं से भिन्न जनों को। इसका समासविग्रह दो प्रकार से हो सकता है। (1) परेभ्यः इतरे परेतरे, तान्। (2) परान् इतरयन्ति परेतराः, तान्। पहले विग्रह का अर्थ हुआ विरोधियों या अज्ञात लोगों से भिन्न, विश्वासपात्र लोग। दूसरे का अर्थ हुआ, शत्रुओं को या दूसरों को अपने पक्ष में मिलाने वाले, भेदनीति का वर्णन होने से दूसरा विग्रह अधिक उचित है। पर+इतर + अण् (कर्तरि)। रक्षान् = रक्षन्तीति रक्षाः, तान्। रक्ष+अच्। विधाय = बनाकर, वि+धा+ क्त्वा (ल्यप्) अशङ्किताकारम् = शङ्काहीन स्वरूप को प्राप्त करता है, इस प्रकार का आकार धारण करता है कि उसके शङ्कित होने का आभास नहीं मिलता, 'शङ्का सञ्जाता अस्येति, शङ्का + इतच्' तदस्य संजातं तारकादिभ्य इतच्' सूत्र से। न शङ्कितः अशङ्कितः (नञ्) तस्य आकारः अशङ्किताकारः, तम्। अशङ्कितः आकारो यथा स्यात्तथा, तम्। उपैति = उप+इ + लट्। शङ्कितः=शङ्का+इतच्

"Failure comes only when we forget our Ideals and objectives and principles." –Jawaharlal Nehru
Scanned with CamScanner

Date ___/___/_____ Page No.: _____

क्रियापवर्गेषु = कार्यों की समाप्ति पर, कार्य के सफल होने पर, अपवर्ग = अप+वृज्+घञ्
'अपवर्गस्त्यागमोक्षयोः क्रियावसाने सांकल्ये' इति हैमः
क्रियाणां अपवर्गः क्रियापवर्गः (ष० तत्पु०), तेषु।
अनुजीविसात्कृताः = सेवकों को पूर्ण रूप से दी गई सम्पत्तियाँ। अनुजीवन्ति इति अनुजीविनः
अनुजीविन्+सात् = अनुजीविसात्+कृ+क्त+टाप्। सम्पदः अस्य कृतज्ञतां वदन्ति = सम्पत्तियाँ उसकी कृतज्ञता को बतलाती हैं। अर्थात् सेवकों को पुरस्कार के रूप में दे दी गई सम्पत्तियों से पता चलता है कि वह कार्य पूरा करनेवालों के प्रति कितना कृतज्ञ है। कृतं जानाति इति कृतज्ञः, तस्य भावः कृतज्ञता, ताम्। कृत=कृ+क्त
कृत+ज्ञा+क 'आतोऽनुपसर्गे कः' कृतज्ञ+तल्+टाप्

Scanned with CamScanner